"उपमा"

(ii) उपमान — वह वस्तु जिससे किसी वस्तु की समता स्थापित की जाय।

(iii) धर्म — रूप-गुण आदि का सूचक वह तत्व जिससे उपमान और उपमेय के बीच सादृश्य व्यक्त किया जाय।

(iv) वाचक — वह पद या शब्द जिससे सादृश्य सम्बन्ध को व्यक्त किया जाय। उदाहरणार्थ :-

" क्षमा योग्य यह! केवल करुणा की अधिकारी!
झुलस जायगी, यह शिरीष-सी है सुकुमारी!!

उपमा के भेद :- (क) पूर्णोपमा :-
(ख) मालोपमा :-
(ग) रसनोपमा :-

(क) पूर्णोपमा — पूर्णोपमा अलंकार में उपमान, उपमेय, समान्य धर्म और वाचक शब्द नामक चारों तत्व वर्तमान रहते हैं उसे पूर्णोपमा अलंकार कहते हैं।
उदाहरण —

" फिर परियों के बच्चों से हम
सुभग सीप के पंख पसार।
समुद्र तरते शुचि ज्योत्स्ना में
पकड़ इन्दु के कर सुकुमार।"

(ख) मालोपमा — जहाँ एक उपमेय के लिए अनेक उपमानों की योजना की जाय वहाँ मालोपमा अलंकार होता है।

(ग) रसनोपमा — जहाँ उपमेय उत्तरोत्तर उपमान बनता चला जाय अथवा जहाँ उपमेय और उपमान को

कमलदेवकुमार

शृंखला (रसना) बन जाती है वहाँ रसनोपमा अलंकार होता है। उदाहरण –

" मति सी नति सी बिनति
बिनति – सी रति चारु।
रति – सी गति गति – सी भगति
तो मैं पवन कुमारु ॥"

" रूपक "

उपमेय पर उपमान के निषेध रहित आरोप को रूपक कहते हैं अर्थात प्रस्तुतेऽप्रस्तुतारोपो रूपकं निरपह्नवे।"

उदाहरण :– रुणित भृंग घंटावली झरत दान मधु नीर
मंद मंद आवत चल्यो कुंजर कुंज समीर।

यहाँ समीर उपमेय पर हाथी उपमान का आरोप होने से रूपक है। रूपक के मुख्य तीन भेद होते हैं : 1. निरंग
2. सांग
3. परम्परित

(1) निरंग – जहाँ अंगों के बिना ही अप्रस्तुत (उपमान) का प्रस्तुत (उपमान) पर आरोप होता है वहाँ निरंग (अंगरहित) रूपक होता है। जैसे –

" बन्दउं गुरु पद-पदुम परागा।
सुरुचि सुबास सरस अनुरागा ॥"

कमलकुमार

(ii) सांग — सांग रूपक में उपमेय के सभी अंगों पर उपमान के सभी अंगों का आरोप मिलता है जैसे—

"बीती विभावरी जाग री
अम्बर पनघट में डुबो रही
तारा घट उषा नागरी।"

(iii) परम्परित — परम्परित रूपक वहाँ होता है जहाँ एक आरोप दूसरे आरोप का कारण होता है। जैसे—

"राम नाम सुन्दर कर तारी।
संशय बिहंग उड़ावन हारी।"